

विश्वास के अनुच्छेद

सिद्धांतों और अनुशासन की पुस्तक का ¶ 106

¶ 106. ग्लोबल मेथोडिस्ट चर्च के विश्वास के अनुच्छेद।

विश्वास के अनुच्छेद ग्लोबल मेथोडिस्ट चर्च के सिद्धान्तगत मानदंड निर्धारित करते हैं। इसी उद्देश्य से, वे सार्वभौमिक चर्च की विश्वास-वचन संबंधी परंपरा की पुष्टि करते हैं, विश्वास की हमारी प्रोटेस्टेंट धर्मवैज्ञानिक विरासत को व्यक्त करते हैं, और यह स्पष्ट करते हैं कि वेस्लेयन-मेथोडिस्ट परंपरा में हमारा चर्च किन विशिष्ट विषयों पर बल देता है और उसके क्या विशिष्ट सरोकार हैं। यद्यपि विश्वास के अनुच्छेद मसीही धर्म के प्रामाणिक सिद्धान्तों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करते हैं, हम मानते हैं कि नीकिया के विश्वास-वचन (381 ई.) की मूल भाषा में कहा गया था कि पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं, और यह कि दुनिया भर के तथा ग्लोबल मेथोडिस्ट चर्च के भीतर के अनेक चर्चों ने यह अतिरिक्त घोषणा नहीं अपनाई है कि आत्मा पुत्र से भी निकलते हैं। अपनी विश्वव्यापी प्रकृति को प्रतिबिंबित करते हुए, ग्लोबल मेथोडिस्टों को पहले से ही यह स्वतंत्रता है कि वे आराधना में और विश्वास की शिक्षा के लिए नीकिया के विश्वास-वचन का उपयोग करते समय “और पुत्र से” वाक्यांश को शामिल करें या छोड़ दें (¶105)। नीकिया के विश्वास-वचन के संबंध में इस प्रथा के अनुरूप, ग्लोबल मेथोडिस्ट अनुच्छेद III, “पवित्र आत्मा” के पहले वाक्य से “और पुत्र से” को छोड़ सकते हैं। विश्वास के अनुच्छेदों की पुष्टि पवित्रशास्त्र से होती है और उन्हें हमारे चर्चों में सिखाया जाएगा। वे आधारभूत मानक हैं, जो “उस विश्वास ... जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था” (यहूदा 3) की घोषणा करते हैं और विश्वासयोग्य शिक्षा में परमेश्वर की स्तुति और आदर का आधार प्रदान करके झूठी शिक्षा से बचाव करते हैं; यह शिक्षा हमें परमेश्वर के राज्य की सेवा के जीवन की ओर उन्मुख करती है।

I. पवित्र त्रिएकत्व

हम एक पवित्र और जीवित परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जो अनन्त हैं, जिनका न कोई शरीर है और न कोई भाग, और जो दृश्य तथा अदृश्य सब वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं। वे सामर्थ्य, बुद्धि, न्याय, भलाई और प्रेम में अनन्त हैं, और अपने नाम की महिमा के लिए सबके कल्याण और उद्धार का अनुग्रहपूर्वक ध्यान रखते हुए शासन करते हैं। हम विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर स्वयं को वैसे ही प्रकट करते हैं जैसे वे हैं: तीन व्यक्ति, जो भिन्न हैं, पर अविभाज्य हैं, और सत्ता, प्रताप, सामर्थ्य तथा महिमा में अनन्तकाल से एक हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

II. यीशु मसीह

हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जो सचमुच परमेश्वर और सचमुच मनुष्य हैं, देहधारी अनन्त वचन हैं, जिनमें दिव्य और मानवीय स्वभाव बिना विभाजन, मिश्रण या परिवर्तन के पूर्णतः और अविभाज्य रूप से एक हैं। अपने दिव्य स्वभाव के अनुसार, वे पिता के साथ एक ही तत्त्व के हैं। अपने मानवीय स्वभाव के अनुसार, वे हमारे साथ एक ही तत्त्व के हैं, फिर भी निष्पाप हैं। पिता के एकमात्र अनन्तकाल से उत्पन्न पुत्र होने के नाते, उनका जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से कुंवारी मरियम से हुआ। उन्होंने सचमुच दुःख सहा; वे क्रूस पर चढ़ाए गए, हमारे पापों के लिए मरे, और मृतकों में से शारीरिक रूप से जिलाए गए। स्वर्ग के सिंहासन पर आरोहण करने के बाद, वह हमारे अनन्त उद्धारकर्ता और मध्यस्थ हैं, जो सब वस्तुओं पर राज्य करते हैं और जीवितों तथा मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा में लौटेंगे।

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर मसीह में होकर संसार का अपने साथ मेल-मिलाप करा रहे थे। मसीह की एक बार चढ़ाई गई भेंट समस्त संसार के पापों—आदिपाप और किए हुए पाप, दोनों—के लिए पूर्ण प्रायश्चित्त, छुटकारा, परमेश्वर के क्रोध का शमन और संतुष्टि है; और पाप के लिए कोई अन्य संतुष्टि नहीं है।

III. पवित्र आत्मा

हम पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं, जो अनन्तकाल से पिता से और पुत्र से निकलते हैं। वे पिता और पुत्र के साथ एक ही तत्त्व के हैं और प्रताप, सामर्थ्य तथा महिमा में उनके पूर्णतः समान हैं। सच्चे और अनन्त परमेश्वर के रूप में, वह हमारी आराधना और स्तुति के योग्य हैं। आत्मा संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में कायल करते हैं। वे यीशु मसीह की गवाही देते हैं, हमें उन पर विश्वास करने की ओर ले जाते हैं, हमें चर्च में सम्मिलित करते हैं, और हमारे भीतर निवास करने वाली अपनी उपस्थिति के द्वारा हमें पवित्र करते हैं। पिता और पुत्र के साथ, पवित्र आत्मा वरदान बाँटते हैं और संसार में परमेश्वर के मिशन को पूरा करने के लिए आवश्यक हर चीज़ से चर्च को सशक्त करते हैं। आनेवाली महिमा को सुनिश्चित करने वाले बयाने के रूप में, वे विश्वासयोग्य लोगों को सात्वना और सहारा देते हैं, हमें सम्पूर्ण सत्य में ले चलते हैं, और हमारी आत्माओं के साथ गवाही देते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

IV. सृष्टि और विधान

हम विश्वास करते हैं कि त्रिएक परमेश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—ने सब वस्तुओं को शून्य से रचा, और कुछ भी ऐसा नहीं बना जिसे परमेश्वर ने अपनी इच्छा से न रचा हो। त्रिएक परमेश्वर की बनाई हुई हर वस्तु अच्छी है, और उन्होंने सब वस्तुओं को अपने सिद्ध प्रेम की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के रूप में बनाया। परमेश्वर अपनी सामर्थ्य और बुद्धि से समस्त सृष्टि को निरंतर संभालते हैं, उस पर शासन करते हैं और उसे बनाए रखते हैं। मानवीय स्वतंत्र इच्छा और जिम्मेदारी इस ईश्वरीय विधान के ढाँचे के भीतर कार्य करती हैं।

V. मानवीय स्वभाव

हम विश्वास करते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में रचे गए थे, और मानवीय स्वभाव को अच्छा रचा गया था तथा उसे गरिमा प्रदान की गई थी। हमें परमेश्वर से, जो अपनी भलाई में सिद्ध हैं, प्रेम करने और उनकी महिमा करने, दूसरों से प्रेम करने, और उनके भले की इच्छा करने तथा उसके लिए काम करने के लिए बनाया गया था। परमेश्वर ने हमें स्त्री और पुरुष बनाया और हमें परिवार, समुदाय तथा उनकी अच्छी सृष्टि के भंडारीपन के लिए रचा। अब हम पाप की भ्रष्टता में गिर चुके हैं और मूल धार्मिकता की अवस्था से बहुत दूर जा चुके हैं। फिर भी हम परमेश्वर के लिए अनमोल बने हुए हैं।

VI. पाप और सेंट-मेंत दिया जाने वाला अनुग्रह

हम विश्वास करते हैं कि मनुष्य मूल धार्मिकता से पतित हो गए हैं और, हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से अलग, जन्म से ही बुराई की ओर झुके हुए हैं। मूल पाप, जो प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव का भ्रष्ट होना है, वह दशा है जिसमें हम सब जन्म लेते हैं। पाप हमारी मानवता के हर भाग को भ्रष्ट करता है। पूर्ववर्ती अनुग्रह के बिना, हम परमेश्वर की ओर नहीं फिर सकते और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले काम करने में असमर्थ हैं। हमारी कोई भी भली इच्छा मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह और हममें कार्यरत आत्मा के द्वारा आती है।

VII. चर्च

हम विश्वास करते हैं कि दृश्य चर्च, मसीह की प्रभुता के अधीन विश्वासियों की सहभागिता है। स्वभाव और बुलाहट, दोनों में चर्च एक, पवित्र, सार्वभौमिक और प्रेरिताई है। यह छुटकारे की संगति है, जिसमें परमेश्वर के वचन का उपदेश दिया जाता है और मसीह की आज्ञा के अनुसार संस्कारों का विधिवत् संचालन किया जाता है। चर्च में सेवकाई के लिए योग्य पुरुषों और स्त्रियों को बिशपों द्वारा हाथ रखने के माध्यम से अभिषिक्त किया जाता है। पवित्र आत्मा के अनुशासन के अधीन, चर्च पवित्र त्रिएक परमेश्वर की आराधना करने और उनकी महिमा करने के लिए, विश्वासियों के आध्यात्मिक निर्माण के लिए तथा संसार के छुटकारे के लिए विद्यमान है।

VIII. पवित्रशास्त्र

हम पुराने और नए नियम की संपूर्णता में उनकी दिव्य प्रेरणा और अधिकार पर विश्वास करते हैं। पुराना नियम नए नियम के विपरीत नहीं है, क्योंकि मसीह दोनों में हमें अनन्त जीवन प्रदान करते हैं। पवित्रशास्त्र अपनी हर प्रतिज्ञा में सत्य है, पूरी तरह भरोसेमंद है, और विश्वास तथा आचरण का एकमात्र अचूक नियम है। इसमें उद्धार के लिए आवश्यक सभी बातें हैं। जो कुछ न तो पवित्रशास्त्र में प्रकट किया गया है और न ही उसके द्वारा स्थापित किया गया है, उसे उद्धार के लिए आवश्यक बात के रूप में नहीं सिखाया जाना चाहिए।

जिस पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया, वही आत्मा उसके माध्यम से कार्य करते रहते हैं और परमेश्वर की प्रजा के आध्यात्मिक निर्माण के लिए चर्च की व्याख्या को प्रबुद्ध करते हैं। वे चर्च की उद्घोषणा का आधार हैं और उन्हें सुनने वाले सभी लोगों के लिए अनुग्रह का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। वचन की उद्घोषणा के माध्यम से, आत्मा हमें पाप का बोध कराते हैं, हमें पश्चात्ताप के लिए बुलाते हैं, हमें मसीह में विश्वास की ओर खींचते हैं, और हमें परमेश्वर के स्वरूप में नया करते हैं।

पुराने नियम के कैनन में सम्मिलित पुस्तकें हैं: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों, रूत, 1 शमूएल, 2 शमूएल, 1 राजा, 2 राजा, 1 इतिहास, 2 इतिहास, एज्रा, नेहेमियाह, एस्तेर, अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत, यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहजकेल, दानियेल, होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हागै, जकर्याह, मलाकी। नए नियम के कैनन में सम्मिलित पुस्तकें हैं: मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, प्रेरितों के काम, रोमियों, 1 कुरिन्थियों, 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, 1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस, तीतुस, फिलेमोन, इब्रानियों, याकूब, 1 पतरस, 2 पतरस, 1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना, 3 यूहन्ना, यहूदा, और प्रकाशितवाक्य।

IX. संस्कार

हम विश्वास करते हैं कि मसीह द्वारा स्थापित संस्कार, भीतर के आध्यात्मिक अनुग्रह के बाहरी और दृश्य चिह्न हैं, और केवल ईसाई के विश्वास के अंगीकार की प्रतिज्ञाएँ या प्रतीक ही नहीं हैं। इस रूप में, वे हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्तियाँ हैं। वे अनुग्रह के विशेष साधन हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर हममें कार्य करते हैं, ताकि उन पर हमारा विश्वास जीवंत हो, मजबूत बने और दृढ़ हो।

हम केवल दो संस्कारों में विश्वास करते हैं, जिन्हें मसीह हमारे प्रभु ने स्थापित किया है: बपतिस्मा और प्रभु का भोज।

बपतिस्मा के विषय में

हम एक ही बपतिस्मे में विश्वास करते हैं, जो दृश्य चर्च और मसीह में नई वाचा में प्रवेश को चिह्नित करता है। बपतिस्मा, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकता में, विश्वास के घराने में हमारे सम्मिलित होने का चिह्न और मुहर है। बपतिस्मा पश्चात्ताप, पाप से शुद्धिकरण और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में नए जन्म को दर्शाता है। हम विश्वास करते हैं कि नई वाचा की प्रतिज्ञाओं में विश्वासियों के बच्चे भी शामिल हैं, जिससे शिशु ईसाई बपतिस्मे के लिए उचित और स्वीकार्य पात्र ठहरते हैं; उन्हें बपतिस्मा देने से इनकार नहीं किया जाना चाहिए। बपतिस्मा पाप बच्चों का पालन-पोषण करना और उन्हें उनके बपतिस्मे के दृढ़ीकरण तक ले जाना चर्च की विशेष जिम्मेदारी है, जो उनके विश्वास के सार्वजनिक अंगीकार और आजीवन शिष्यत्व के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के रूप में होता है।

प्रभु के भोज के विषय में

हम विश्वास करते हैं कि प्रभु का भोज हमारे छुटकारे का संस्कार है, जिसके द्वारा हमें परमेश्वर के सामर्थी उद्धार-कार्यों में सहभागी बनाया जाता है। पवित्र प्रभु भोज मसीह के दुखों और मृत्यु का स्मरण भी है और मसीह तथा एक-दूसरे के साथ ईसाइयों के प्रेम और एकता का प्रतीक भी है। यद्यपि तत्वों की स्वयं आराधना नहीं की जानी चाहिए, फिर भी पवित्र आत्मा अनुग्रह के साधन के रूप में संस्कार के द्वारा रहस्यमय रीति से मसीह की देह और लहू प्रदान करते हैं, जबकि प्रत्येक तत्व का पदार्थ अपरिवर्तित रहता है। जो लोग इस संस्कार को श्रद्धापूर्वक ग्रहण करते हैं, वे उनके फिर आने तक विश्वास के द्वारा मसीह की देह और लहू में सहभागी होते हैं।

X. सार्वजनिक आराधना और प्रभु का दिन

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की आराधना चर्च के जीवन के लिए अनिवार्य है और सभी ईसाइयों का कर्तव्य तथा विशेषाधिकार है। प्रभु का दिन सार्वजनिक आराधना और मसीह के पुनरुत्थान के स्मरण के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराया गया है। परमेश्वर की प्रजा के साथ नियमित रूप से एकत्र होना आध्यात्मिक विकास और हमारे पवित्रीकरण के लिए आवश्यक है। हम विश्वास करते हैं कि आराधना करने वाले समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार चर्च सार्वजनिक आराधना के क्रम में बदलाव कर सकता है। उपासना हमेशा ऐसी भाषा और रूप में की जानी चाहिए जिसे एकत्रित हुए लोग समझते हों, जो पवित्रशास्त्र के अनुरूप हो और चर्च की व्यवस्था और अनुशासन के अनुसार हो।

XI. पश्चात्ताप

हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा संसार को पाप के विषय में कायल करते हैं और हमें बुराई से फिरकर मसीह पर विश्वास करने में समर्थ करते हैं। सच्चा पश्चात्ताप बुराई का त्याग करने और पाप का अंगीकार करने, तथा अनुग्रह के साधनों में सक्रिय रूप से भाग लेने और भले काम करने के लिए प्रयत्नशील होने की ओर मुड़ने से व्यक्त होता है। यह विनम्रता की एक मनोवृत्ति है, जिसे परमेश्वर अविश्वासियों को धर्मी ठहराए जाने की तैयारी के रूप में और विश्वासियों को निरंतर अनुग्रह के रूप में देते हैं; इसके द्वारा हम पवित्रता में बढ़ते हैं और मसीह के साथ और गहरी संगति में प्रवेश करते हैं।

XII. धर्मी ठहराया जाना और नया जन्म

हम विश्वास करते हैं कि धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण घोषणा है कि हमारे पाप क्षमा किए गए हैं और मसीह की योग्यता के आधार पर उनकी दृष्टि में हमें धर्मी माना गया है। परमेश्वर की यह घोषणा हम तक केवल अनुग्रह से, केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा ही पहुँचती है। धर्मी ठहराया जाना हमारे अपने भले कामों या व्यक्तिगत योग्यता का परिणाम नहीं है, क्योंकि मसीह के क्रूस पर प्रायश्चित्तकारी बलिदान के सिवाय कुछ भी ईश्वरीय न्याय की मांगों को पूरा नहीं कर सकता, और उनके सिवाय कुछ भी हमें मूल पाप या हमारे द्वारा किए गए पापों से शुद्ध नहीं कर सकता। इसलिए, हमें अनुग्रहपूर्वक आमंत्रित किया जाता है कि हम विश्वास के द्वारा मसीह को ग्रहण करें और अपने व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में उन पर पूरा भरोसा और विश्वास रखें। मसीह के द्वारा हम परमेश्वर की संतान और अनन्त जीवन के वारिस बनाए जाते हैं। यह कि हम केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं, अत्यंत हितकारी सिद्धांत और बड़ा सात्वना देने वाला सत्य है।

हम विश्वास करते हैं कि नया जन्म यीशु मसीह के द्वारा और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से धार्मिकता में भीतर से नया किए जाने का कार्य है। जब तक हम नया जन्म न लें, हम परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते। नए जन्म के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल होता है, हम ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी बनाए जाते हैं, मसीह में नया जीवन अनुभव करते हैं और अपनी इच्छा तथा भावनाओं से उनकी सेवा करने में समर्थ होते हैं। नया जन्म हमारा प्रारंभिक पवित्रीकरण है; इसके बाद, जब हम प्रेम में सिद्ध किए जाने की खोज करते हैं, तो हम क्रमशः पवित्रता में नए किए जाते हैं।

XIII. भले काम

हम विश्वास करते हैं कि भले काम विश्वास का आवश्यक फल हैं और नए जन्म के बाद आते हैं, पर उनमें हमारे पापों को दूर करने या ईश्वरीय न्याय को टालने का सामर्थ्य नहीं है। हम विश्वास करते हैं कि भले काम, जो मसीह में परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उन्हें स्वीकार्य हैं, सच्चे और जीवित विश्वास से उत्पन्न होते हैं। भले कामों के माध्यम से और उनके द्वारा हमारा विश्वास प्रकट होता है। विश्वासियों से उन कामों के अतिरिक्त किसी अन्य काम की अपेक्षा नहीं की जा सकती जिनकी आज्ञा पवित्रशास्त्र में दी गई है। हमारे भले काम न तो परमेश्वर को हम पर अनुग्रह करने के लिए बाध्य करते हैं और न ही दूसरों के लिए योग्यता अर्जित करते हैं।

XIV. पूर्ण पवित्रीकरण

हम विश्वास करते हैं कि पूर्ण पवित्रीकरण सिद्ध प्रेम, धार्मिकता और सच्ची पवित्रता की अवस्था है। यह वचन और आत्मा के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है। पूर्ण पवित्रीकरण मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है और परमेश्वर की हर संतान को इसकी गंभीरता से खोज करनी चाहिए। जो परमेश्वर से जन्मे हैं, वे पहले से ही पाप की शक्ति और प्रभुत्व से स्वतंत्र किए जा चुके हैं। इसके बाद वे मूल पाप से शुद्ध किए जाते हैं और उनके विचार, वचन और कर्म से उसका दूषण धो दिया जाता है। ऐसे विश्वासी अब अपने पूरे हृदय, प्राण, मन और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करने, और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करने के लिए स्वतंत्र हैं; वे परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं के अनुसार निष्कलंक चलते हैं।

पवित्रीकरण की प्रक्रिया, पवित्र आत्मा की सेवकाई के द्वारा, पूर्णतः पवित्र करने वाले अनुग्रह को प्राप्त करने का मार्ग तैयार करती है। हम विश्वास करते हैं कि सिद्ध प्रेम, या ईसाई पूर्णता, हमें उन दुर्बलताओं, अज्ञानता या गलतियों से मुक्त नहीं करती जो सभी में सामान्य हैं, और न ही आगे पाप करने की संभावना से। मन

के शुद्ध लोगों के लिए पवित्र आत्मा के अनुग्रह और सामर्थ्य के द्वारा पवित्रता में बने रहकर लगातार आने वाली परीक्षाओं से, विशेषकर आध्यात्मिक घमंड के रूप में आने वाली परीक्षाओं से, सावधान रहना आवश्यक है।

XV. न्याय और भविष्य की अवस्था

हम विश्वास करते हैं कि मसीह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा में फिर आएँगे। हम शरीर के पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं: दुष्टों के लिए अनन्त दण्ड और धर्मियों के लिए परमेश्वर की नई सृष्टि में अनन्त जीवन।

दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में शनिवार, 5 सितंबर 2026 को जनरल कॉन्फ्रेंस द्वारा स्वीकृत।